रामचरितमानस की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता: एक दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विवेचना

Dr. Shanker Suman Singh Bhadoria
Guest Faculty in Department of Philosophy
PMCOE Govt. SMS PG College, Shivpuri, M.P.
Krantivir Tatya Tope University, Guna, Madhya Pradesh, (India)
E-mail: rajesh982624@rediffmail.com **ORCHID ID:** https://orcid.org/0009-0003-9405-9424

How to Cite this Article:

Bhadoria, S. S. S. (2026). रामचररतमाि◌स की वतशमाि◌ जीवि में प्रासांनगकता: एक दार्शनिक एवां आध्यात्मिक नववेचिा. International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management, *02*(03). https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i3.090

License:

This article is published under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and the source are credited.

© The Author(s). Published by International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management.

https://doi.org/ 10.55041/ijcope.v2i3.090

सार -

भारतीय दार्शनिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा के अनुक्रम में रामचरितमानस न केवल धार्मिक आस्था का आधार स्तम्भ है बल्कि जीवन के नैतिक-मापदंडों, सामाजिक-समरसता और आध्यात्मिक-आदर्शों की समृद्धि का स्त्रोत है। तुलसीदासजी कृत यह महाकाव्य समाज में नीति, नेतृत्व, धर्म, करुणा, मर्यादा, त्याग, सेवा, भक्ति और लोक-कल्याण जैसे आदर्शों को स्थापित करने वाला है। वर्तमान परिवेश का जीवन भौतिकवाद, नैतिक-संकट, मानसिक-तनाव और सामाजिक-विघटन जैसी जटिलताओं से ग्रसित है, ऐसे समय में रामचरितमानस के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का मूल ध्येय रामचरितमानस में निहित दार्शनिक तथा आध्यात्मिक तथ्यों का विश्लेषण कर इनके मार्मिक दृष्टिकोण और वर्तमान परिवेश में इस ग्रंथ की प्रासंगिकता को ज्ञात करना है साथ ही पारिवारिक, सामाजिक और वैश्विक स्तर पर व्याप्त जटिलताओं का समाधान खोजना है।

यह शोध-पत्र मूलत: गुणात्मक पद्धति पर आश्रित होने से ग्रंथीय विश्लेषण, आध्यात्मिक तथा दार्शनिक व्याख्याओं को समाहित किए है, जो स्पष्ट करता है कि रामचरितमानस में विदित आदर्श-सिद्धांत वर्तमान परिवेश में सभी प्रकार जटिलताओं का सम्पूर्ण समाधान हैं। यह मात्र धार्मिक ग्रंथ न होकर एक सर्वकालिक जीवन-दर्शन है, जो आधुनिक मानवीय जीवन स्तर को संतुलित, नैतिक और आध्यात्मिक दिशा प्रदान करने वाला दिग्दर्शक है।

शब्द बीज -

रामचरितमानस, तुलसीदास, भारतीय दर्शन, भक्ति, आध्यात्मिकता, रामराज्य, अवसाद, मानवीय, ईश्वर, चरित्र, नैतिकता, आधुनिक जीवन।

परिचय -

16वीं सदी में तुलसीदास जी (जन्म संवत 1554, स्थान राजापुर चित्रकूट, जिला बांदा, उत्तर प्रदेश) रामभक्ति शाखा के सर्वोपरि कवि द्वारा "रामचरितमानस" ग्रंथ की रचना अवधी भाषा में करने का उद्देश्य इस ग्रंथ को अधिक-से-अधिक जन-सामान्य तक पहुँचाना था।[1]

यह ग्रंथ राम के जीवन दर्शन को विविध आदर्श रूपों में प्रस्तुत करता है। कभी मर्यादा पुरूषोत्तम के रूप में तो कभी आदर्श-राजा, आदर्श-पुत्र, आदर्श-अग्रज तथा आदर्श-सखा के रूप में कई संकल्पनाऐं संजोय हुये हैं। यह ग्रंथ भारतीय समाज में नैतिकता के आधार पर सृजित जीवन-मूल्यों जैसे- सत्य, करुणा, सेवा, त्याग और कर्तव्य को आधुनिक काल मे भी मानव जीवन के लिए पूर्ण प्रासंगिक होना चारितार्थ करता है। वर्तमान परिवेश में मानव सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक विघटन जैसी विषमताओं से ग्रसित है। रामचरितमानस का व्यापक दृष्टिकोण एवं उसके सिद्धांत ही इन विषमताओं का सम्पूर्ण निवारण करते हैं।

1. रामचरितमानस में दार्शनिकता एवं आध्यात्मिकता -

तुलसीदास जी ने इस महाकाव्य में भारतीय दर्शन की सूक्ष्मतम अवधारणाओं को बड़े सहज ढंग से सरल लोकभाषा में संग्रहित किया है, जो जनमानस के लिये शैक्षणिक दृष्टि से सर्वोत्तम है। रामचरितमानस में वर्णित दार्शनिकता भारतीय दर्शन की विविध विचारधाराऐं जैसे- वेदांत, भक्ति, धर्म और कर्म आदि से प्रभावित हैं[2] साथ ही मानवीय जीवन के जटिल प्रश्नों जैसे- आत्मा एवं ईश्वर का स्वरूप, जगत का उद्देश्य, धर्म की आवश्यकता और मोक्ष प्राप्ति आदि विषयों पर दार्शनिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जो विदित दार्शनिक आयामों से समझ सकते हैं।

1.1. ब्रह्म और ईश्वर की अवधारणा -

न केवल रामचरितमानस अपितु भारतीय दर्शन में भी ब्रह्म को सर्वोच्च सत्य रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। तुलसीदास जी ने ईश्वर को निराकार और साकार दोनों स्वरूपों में स्वीकार किया है क्योंकि वे वेदांत परंपरा से प्रभावित थे। ईश्वर के दो प्रमुख स्वरूप निर्गुण ब्रह्म (ईश्वर का निराकार और निरुपाधिक स्वरूप है, जो समस्त जगत का मूल कारण है) तथा सगुण ब्रह्म (निराकार और निरुपाधिक ब्रह्म जब विश्व और जन-कल्याण के लिए अवतार लेते हैं तब उनका स्वरूप सगुण होता है। इसी कारण तुलसीदसजी ने राम को ईश्वर (सगुण-ब्रह्म) कहा है) अवतरित परम ब्रह्म जब सगुण रूप में अपने भक्तों से वात्सल्यता का भाव प्रकट करते हैं तो यही प्रेम-बंधन भक्ति का मूल आधार बन जाते हैं, जो ईश्वर और भक्त के मध्य प्रेम और विश्वास को दृढ़ करते हैं।[3] राम का अवतार न केवल पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटना का परिणाम है बल्कि यह मानव की आध्यात्मिक उन्नति का शीर्षस्थ प्रमाण है।

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।[4]

1.2. जीव तथा आत्मा का स्वरूप -

वेद तथा उपनिषदों से प्रभावित यह ग्रंथ आत्मा को परमात्मा का ही अंश मानता है। इस दृष्टिकोण से जीव और ब्रह्म भेद मूलक नहीं हैं परंतु अविद्यावश जीव स्वयं को सीमित कर लेने से अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान नहीं पाता, जब ज्ञान और भक्ति के माध्यम से अविद्या का नाश होता है, तो जीव अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है और परम सत्य में एकलय हो जाता है। इस अवस्था तक पहुँचने के लिये आत्मा को तीन अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है।

1. अज्ञान (अविद्या) की अवस्था (जीव सांसारिक मोह और माया से ग्रसित रहता है)
2. ज्ञान (विद्या) की अवस्था (आत्मा को अपना यथार्थ स्वरूप प्रकट होने लगता है)
3. मोक्ष की अवस्था (आत्मा, परमात्मा से एकत्व हो जाती है)[5]

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी।।
ईश्वर अंश जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी।।
सो मायाबस भयउ गोसाईं। बध्यौं कीर मरकट की नाईं।।
जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई।।[6]

1.3. माया एवं भक्ति दर्शन -

रामचरितमानस की दार्शनिक मीमांसा में माया और भक्ति को अतिमहत्वपूर्ण माना गया है। माया (वह शक्ति, जो जीव के विविध बंधनों की कारक एवं अविद्या की जननी) भौतिक पदार्थों को ही परम सत्य समझने हेतु प्रेरित करती है। भक्ति एवं ज्ञान का आलोक ही मोक्ष का प्रथम सोपान एवं सर्वाधिक उपयुक्त साधन है, इसी प्रयोजन से रामचरितमानस में नवधा भक्ति का उल्लेख किया गया है।

1- सत्संग (संतों की संगति)
2- कथा-श्रवण (ईश्वर की कथाओं को रुचिपूर्ण तन्मयता से सुनना)
3- गुरु-सेवा (अभिमान रहित गुरु सेवा)
4- गुण-गान (निष्कपट भाव से ईश्वरीय महिमा का गुणगान)
5- मंत्र-जाप (आस्था युक्त मंत्र-जाप)
6- इंद्रिय-निग्रह (शील, वैराग्य युक्त उत्तम चरित्र का पालन)
7- समत्व (प्रत्येक स्थान पर ईश्वर तथा संतों के प्रति समता भाव)
8- संतोष (प्राप्त वस्तु में पूर्ण संतोष करना)
9- सरलता (छल-कपट से परे स्वभाव)

नवधा भक्ति के माध्यम से जीव आध्यात्मिक चेतना को विकसित कर लेता है। जिससे जीव अहंकार और अज्ञानता से मुक्त होकर ईश्वर सानिध्य को प्राप्त कर लेता है। रामचरितमानस में भक्ति को ज्ञान और कर्म से भी श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि भक्ति निर्विकार हृदय में उत्पन्न होती है, जो माया के प्रभाव से मुक्त होने का सबसे सर्वश्रेष्ठ साधन है।

नवधा भगति कहउँ तोहि पाहीं। सावधान सुनु धरु मन माहीं।।
प्रथम भगति संतन्ह कर संगा। दूसरि रति मम कथा प्रसंगा।।
गुरु पद पंकज सेवा तीसरि भगति अमान।
चौथि भगति मम गुण गन करइ कपट तजि गान।।
मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा। पंचम भजन सो वेद प्रकासा।।
छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा।।
सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा।।
आठवँ जथा लाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखई पर दोषा।।
नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।[7]

1.4. धर्म और मर्यादा की नीति -

धर्म और मर्यादा रामचरितमानस का दार्शनिक केंद्र बिन्दु है। जीवन में धर्म के अनुसार मर्यादित आचरण ही पुरुषार्थ प्राप्ति एक मात्र साधन है। धर्म से तात्पर्य मात्र धार्मिक अनुष्ठान नहीं है बल्कि कर्तव्य, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व की समग्र नीति है, जो समाज में संतुलन और नैतिक व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करती है। राम का जीवन दर्शन इस समग्र नीति का सर्वोत्तम उदाहरण है। इसी कारण उन्हें "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा गया है।

धरमु न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बखाना।।
मैं सोइ धरमु सुलभ करि पावा। तजें तिहूँ पुर अपजसु छावा।।[8]

1.5. कर्म -

कर्म सिद्धांत को न केवल रामचरितमानस में ही स्थान दिया गया है बल्कि वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, गीता और भारतीय दर्शन में भी महत्वपूर्ण माना गया है, जो स्पष्ट करता है कि प्रत्येक जीव अपने कर्मानुसार फल का भोग अवश्य करता है। यह दृष्टिकोण मानवीय जीवन को संतुलन और स्थिरता प्रदान करने वाला है। कर्म सिद्धांत ही जन्म-मरण के चक्र का प्रमुख कारण है।

कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।।[9]

1.6. आदर्श जीवन की अवधारणा -

चरित्र प्रधान यह ग्रंथ मानवीय आदर्श जीवन के संपूर्ण दार्शनिक तथ्यों का विवेचन करता है, जो मनुष्य को सामाजिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक उन्नति करने में सहायक हैं। आदर्श मानव जीवन में सत्य, त्याग, सेवा, दया, करुणा, विनम्रता आदि गुणों को महत्व दिया गया है। इन गुणों का अनुसरण करने पर मानव देव-तुल्य हो जाता है।

बड़ें भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक सँवारा।।[10]

1.7. नेतृत्व एवं शासन प्रणाली -

वैसे तो रामचरितमानस में समस्त मानवीय विषयों के समग्र सिद्धांत वर्णित हैं फिर भी नेतृत्व और शासन के आदर्श सिद्धांत विशेष रूप से न केवल जनहितार्थ है बल्कि परिवार तथा समाज के समग्र उन्नयन हेतु यह सिद्धांत प्रतिपादित हैं। रामराज्य न केवल न्याय, समानता, सामाजिक सुरक्षा, नैतिक शासन पर आधारित था बल्कि दैहिक ताप (शारीरिक कष्ट जैसे- रोग, पीड़ा, मानसिक तनाव), दैविक ताप (देवताओं के द्वारा प्रदान किए जाने वाले कष्ट जैसे- अनावृष्टि, अतिवृष्टि, भूकंप, तूफान आदि) तथा भौतिक ताप (बाह्य सांसारिक प्राणी जनित दुख जैसे- शत्रुता, अन्याय, चोरी, हिंसा आदि) निमित्त मात्र भी नहीं था। यही है रामराज्य में नेतृत्व और शासन की अवधारणा, जो वर्तमान में आदर्श शासन-प्रणाली के दृष्टिकोण से देखी जाती है।

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।[11]

रामचरितमानस का आलोकपूर्ण ज्ञान जनकल्याण के अलावा सभी वर्गों के प्रति समानता, सामाजिक समरसता और सहिष्णुता के भावों को पुष्ट करता है। यह भाव वर्तमान परिवेश में सामाजिक न्याय और समानता की अवधारणाओं के साथ परस्पर संबंधित है।

1.8. मोक्ष की अवधारणा -

जहां भारतीय दर्शन मोक्ष को जीवन का मूल अंतिम उद्देश्य के रूप में स्वीकारता है तो दूसरी ओर रामचरितमानस मोक्ष का अर्थ केवल जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति मात्र नहीं बल्कि परम शाश्वत शांति की परमानंद अवस्था को स्वीकारता है।

भक्ति, ज्ञान और कर्म के माध्यम से मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इस दृष्टिकोण से सदेह मुक्ति (या सद्योमुक्ति) कोई दूर की आध्यात्मिक अवस्था का द्योतक नहीं बल्कि जीवन में ही अनुभव की जा सकने वाली परम शाश्वत आनंद की अवस्था है। जबकि विदेह मुक्ति मृत्यु के बाद की ब्रह्मलीन अवस्था है। इस जीवनमुक्त अवस्था की स्थिति में जीव के प्रारब्ध कर्मों का पूर्ण छय हो जाता है जिससे आत्मा पुनर्जन्म के अनवरत चक्र से मुक्त हो जाती है।

मम दर्शन फल परम अनूपा। जीव पाव निज सहज सरूपा।।[12]

2. आधुनिक परिवेश में रामचरितमानस की दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रासंगिकता -

आधुनिक समय का मानवीय जीवन विविध जटिल अवसादों जैसे- मानसिक एवं शारीरिक तनाव, प्रतिस्पर्धा और भौतिकता से ग्रसित है। ऐसे समय में रामचरितमानस की उद्देश्यपूर्ण आध्यात्मिक शिक्षाऐं अति-प्रासंगिक प्रतीत होती हैं। यह ज्ञान-ग्रंथ मानव को मानसिक एवं शारीरिक शांति प्राप्त करने के साथ-साथ दैनिक जीवन में सामाजिक एवं पारिवारिक समरसता बनाए रखने तथा आध्यात्मिक उन्नति में मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।[13] रामचरितमानस ग्रंथ मात्र शब्दों का संग्रह नहीं अपितु पुरुषार्थ एवं उन्नत चरित्र का अनुपम उदाहरण है। इसका आध्यात्मिक चिंतन आधुनिक जीवन में यथार्थता का अवलोकन कराता है कि जीवन का वास्तविक सुख बाह्य भौतिक वस्तुओं से नहीं अपितु आंतरिक शांति और ईश्वर सानिध्य से ही प्राप्त किया जा सकता है।

2.1. धर्म के प्रति रामचरितमानस का दृष्टिकोण -

भारत की अद्वितीय सांस्कृतिक परंपरा में रामचरितमानस न केवल धार्मिक जीवन को प्रत्यक्षत: प्रभावित करता है बल्कि पारिवारिक और सामाजिक उत्थान के लिए दिशा बोध करने वाला दीपतुल्य है। यह महाकाव्य भारतीय समाज की आध्यात्मिक चेतना, नैतिक जीवन-दर्शन तथा उनके मूल्यों और आदर्शों का निदर्शक है।

वर्तमान परिवेश में निश्चित ही विज्ञान, तकनीकी, भौतिक-उन्नति और वैश्वीकरण ने मानव मस्तिष्क की आध्यात्मिकता को कुंठित कर दिया है। जहां एक ओर इन परिवर्तनों ने मानव जीवन को सुविधा सम्पन्न और सरल तो बनाया ही है, वहीं दूसरी ओर नवीन जटिलताओं जैसे- मानसिक अवसाद और सांस्कृतिक विघटन जैसी विकट समस्याओं को भी जन्म दिया है। तत्कालीन समय में रामचरितमानस की प्रासंगिक धर्म पूर्ण शिक्षाऐं जीवन का संतुलन स्तर बनाने तथा आध्यात्मिक दिशा प्रदान करने की क्षमता रखती हैं। यह ग्रंथ मात्र धार्मिक आस्था का नहीं, बल्कि समग्र सामाजिक दर्शन का विषय है, जो वर्तमान समय की समस्त धार्मिक जटिलताओं का समाधान एवं दिशा-बोध करने वाला है।[14] इस हेतु रामचरितमानस का ज्ञान-कोश जीवनदायी संजीवनी बन जाता है।

© 2026 The Author(s). Published by IJCOPE Journal. Website: https://ijcope.org/

2.1. नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना -

नैतिक मूल्य ही व्यक्ति के उत्थान के मूलभूत कारक हैं, नैतिक मूल्यों की स्थापना में सत्य, करुणा, सेवा, त्याग और विनम्रता जैसे मूल्यों को सर्वोपरि रखा गया है क्योंकि राम का चरित्र इन सभी गुणों से ओत-प्रोत है। यदि समग्र दृष्टि से रामचरितमानस का यथार्थ मूल्यांकन किया जावे, तो ज्ञात होगा कि राम का जीवन दर्शन मर्यादा और नैतिकता में ही निहित था।[15] आधुनिक समाज में स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा की बढ़ती प्रवृत्ति ने नैतिक मूल्यों को पूरी तरह से विस्मृत कर दिया है। ऐसे समय में रामचरितमानस के नैतिक सिद्धांत ही समाज में नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की क्षमता रखते हैं।

2.2. सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के लिए मार्गदर्शक के रूप में -

आधुनिकता के परिवेश में पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों में नित्य प्रति परिवर्तन हो रहे हैं। व्यक्तिवाद, अर्थवाद, भौतिकवाद की उन्मादिता और मानसिक तनाव पारिवारिक विघटन के कारण बन रहे हैं। इस विकट, भयावह स्थिति में रामचरितमानस के आदर्शात्मक सिद्धांत पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन की जटिलताओं के निवारण में पियूष तुल्य पोषण करता है। यह ग्रंथ और इसकी शिक्षाऐं परिवार एवं समाज के प्रति सम्मान तथा प्रेम-भाव को विकसित करती हैं।[16] रामचरितमानस के बीज सिद्धांत परिवार को मात्र सामाजिक संस्था के रूप में नहीं अपितु प्रेम, त्याग और परस्पर सहयोग पर आधारित संरचना मानते हैं, जो ईश्वर से आध्यात्मिक संबंध स्थापित कराने में महती भूमिका का निर्वहन करता है।

2.3. नेतृत्व और शासन के आदर्श रूप में -

वर्तमान समय में नेतृत्व संकट की समस्या अतिगंभीर स्तर की है। महत्वाकांक्षी व्यक्ति अक्सर सत्ता प्राप्ति हेतु नेतृत्व के मूल उद्देश्यों को स्वार्थपरकता वश भुला देते हैं। इस अवगुणीय नेतृत्व समस्या का सम्पूर्ण समाधान रामचरितमानस में है। इस ग्रंथ में नेतृत्व और शासन के उन आदर्शात्मक सिद्धांतों को परिभाषित किया गया है, जो सामाजिक समानता, आर्थिक-संतुलन, न्यायपूर्ण-शासन, नैतिक-प्रशासन और पुत्रवत प्रजा-जन व्यवहार के आधार पर सृजित हैं।[17] रामराज्य की अवधारणा पूर्व में कितनी प्रासांगिक रही होगी कि हम वर्तमान में रामराज्य के दृष्टांत को आदर्श शासन-प्रणाली के रूप में व्यक्त करते हैं। आधुनिक परिवेश के लोकतांत्रिक समाज में रामराज्य प्रेरणादायक है क्योंकि यह शासन-प्रणाली को लोक-कल्याण तथा नैतिकता के अविकारी आदर्शों से जोड़ती है।

2.4. मानसिक अवसाद से मुक्ति एवं आध्यात्मिक संतुलन -

आधुनिक मानवीय जीवन सर्वाधिक मानसिक तनाव एवं विविध अवसादों से ग्रसित है, जिससे मानव जीवन की आध्यात्मिकता निम्न स्तर की हो चुकी है। ऐसे समय में रामचरितमानस का आध्यात्मिक पोषण मानसिक एवं शारीरिक शांति प्रदान करने वाला सहज एवं सुलभ साधन है। यह ग्रंथ योग, ध्यान, भक्ति, और नाम-स्मरण की मानव जीवन में अनिवार्यता को सिद्ध करने वाला स्त्रोत है।[18] ये सभी साधन न केवल मन को स्थिर, एकचित्त और शांत बनाने वाले हैं बल्कि आंतरिक सुख, शांति और मानसिक संतुलन प्रदान करने वाले भी हैं।

2.5. सांस्कृतिक उत्थान -

वैश्वीकरण के दौर में कुछ समुदायों की सभ्यता एवं संस्कृतियों का पूर्ण नाश हो चुका है तथा कुछ संघर्षरत हैं। इन्हें अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान बचाने हेतु नित्य प्रति विविध विषमताओं से संघर्ष करना पड़ रहा है। इसका मूल कारण इन लोगों ने सामाजिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक विकास के मूल्यों को अस्वीकार किया तथा अन्य सामाजिक समुदायों से भी विरक्त हो गए। प्रतिस्पर्धात्मक काल परिवर्तन के साथ परिणति यह हुई कि ये लोग जिस स्तर पर थे, वे उसी स्तर पर अपने अस्तित्व, सभ्यता और संस्कृति की पहचान खो चुके हैं। रामचरितमानस न केवल भारतीय संस्कृति के मूल्यों का पोषण करता है बल्कि अखिल विश्व में धर्म, मानवता और नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि महत्व प्रदान करता है।[19]

यह ज्ञान-ग्रंथ सर्व समुदाय की सांस्कृतिक परंपराओं, आध्यात्मिक दृष्टि और नैतिक आदर्शों का संरक्षक है। जिससे आधुनिक वैश्वीकरण के दौर में समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों को और भी ज्यादा पुष्ट कर सकता है। अत: हम कह सकते हैं कि रामचरितमानस न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि सांस्कृतिक उत्थान का मूल स्रोत है। इसके आदर्श वर्तमान समाज को नैतिकता, कर्तव्य और मानवीय मूल्यों के उत्तरोत्तर विकास की ओर प्रेरित करते हैं। यदि मानव इन आदर्शों को अपने जीवन में प्रभावी ढंग से स्वीकार ले तो समाज में निश्चित ही सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति हो जाएगी।

2.6. रामचरितमानस से शिक्षा और नैतिक विकास -

आधुनिकता के दौर की शिक्षा-प्रणाली ज्ञान, कौशल और तकनीकी संवर्धन पर आधारित होने से इसमें नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विकास की न्यूनता है। जिसका परिणाम यह हुआ कि विद्यार्थियों में अनुशासन, सेवा-भावना, सम्मान और नैतिकता जैसी महती मानवीय

© 2026 The Author(s). Published by IJCOPE Journal. Website: https://ijcope.org/

दृष्टिकोण समाप्त हो चुके हैं। रामचरितमानस की उद्देश्यपूर्ण शिक्षाऐं एवं उनके दृष्टांत नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए अतिमहत्वपूर्ण हैं, जो विद्यार्थियों में विविध गुणों का समग्र विकास करती हैं जिससे उनका जीवन संतुलित और मानवीय बना जाता है।[20]

3. रामचरितमानस में वैश्विक दृष्टिकोण -

विश्व-बंधुत्व भावना के अनुसार संपूर्ण विश्व एक परिवार (वसुधैव कुटुंबकम) है। विश्व के समस्त मानवों के प्रति बंधुत्व का भाव, स्नेह, समता और परस्पर सहयोग ही इसका मूल भाव है। धर्म, जाति, वर्ण के आधार पर भेदभाव की जगह परस्पर समता, सम्मान को सर्वोपरि स्वीकार किया गया है, जो निश्चित ही वैश्विक शांति और सौहार्द के लिए परम अनिवार्य है। यह संदेश केवल भारतीय समाज तक ही नहीं अपितु विश्व में व्याप्त समस्त सभ्यताओं और संस्कृतियों का निर्वहन कर रहे राष्ट्र और मानवों के लिए है।[21] रामचरितमानस में मानव के लिए करुणा और प्रेम का सार्वभौमिक संदेश का महत्व वर्तमान के वैश्विक समाज में तब और भी ज्यादा बढ़ जाता है, जब विश्व के विकसित महत्वाकांक्षी राष्ट्र परस्पर विविध स्तर के संघर्षों और असमानताओं से जूझ रहें हैं।

निष्कर्ष-

रामचरितमानस की वर्तमान जीवन में प्रासंगिकता: दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विवेचना से स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा का निर्वाहक ग्रंथ है। जो मानव जीवन के लिए अनिवार्य सामाजिक, पारिवारिक, नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। यह दार्शनिक कृति ब्रह्म, आत्मा, माया, भक्ति, पुरुषार्थ और मोक्ष जैसे गहन दार्शनिक सिद्धांतों का विश्लेषण करता है। यह ग्रंथ अतीत की धरोहर ही नहीं अपितु वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक भी है।
रामचरितमानस की मूल शिक्षाऐं उत्कृष्ट चरित्र और पुरुषार्थ के आधार पर आत्मिक-शांति और ईश्वर के साथ एकत्व (मोक्ष) होकर परमानन्द को प्राप्त करना है, जिसकी प्राप्ति किसी भी बाह्य भौतिक पदार्थों से संभव नहीं है। मानव जीवन का यथार्थ उद्देश्य केवल भौतिक उपलब्धि में नहीं बल्कि आत्मिक उन्नति में निहित होना दर्शाता है। रामचरितमानस में ईश्वर प्राप्ति का सहज, सरल और प्रभावी मार्ग भक्ति तथा ईश्वर के प्रति समर्पण है, जो नवधा भक्ति से प्राप्त की जा सकती है। यह आध्यात्मिक एवं आत्मिक विकास के लिए सर्वोत्तम है।

व्यक्ति, परिवार, समाज और संतुलित विकास के लिए अनिवार्य है कि सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, नैतिकता, सामाजिक समरसता और लोक-कल्याण के भाव को अपने आचरण में शामिल करें, उनका पालन पूर्ण कर्तव्यनिष्ठ होकर करें।
रामराज्य की अवधारणा केवल धार्मिक या पौराणिक कल्पना नहीं अपितु यह एक व्यापक पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, न्याय-प्रणाली, समता, जन-कल्याण जैसे दार्शनिक मूल्यों से युक्त है, जो मानव समाज के लिए एक आदर्श शासन-प्रणाली के उद्देश्यों को दर्शाता है। वर्तमान परिवेश में जब अखिल विश्व राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक असमानता और नैतिक संकट की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, ऐसे समय में रामराज्य के सिद्धांत प्रेरणादायी मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं। रामराज्य का समग्र दर्शन केवल भारतीय संस्कृति का नहीं बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक सार्वभौमिक आदर्शात्मक धरोहर है। राम का पावन चरित्र परम सत्य का प्रतीक है।
रामराज्य के राजनीतिक दर्शन का पक्ष न्याय, उत्तरदायित्व और लोक-कल्याण पर आधारित है जिसका उद्देश्य न्याय पूर्ण उत्तरदायी नेतृत्व एवं पारदर्शी शासन-प्रणाली को स्थापित करना है। जबकि रामराज्य के सामाजिक दर्शन का पक्ष समानता, सामाजिक समरसता, पारिवारिक मूल्यों का संरक्षण और नैतिक जीवन पर आश्रित है। महात्मा गांधी के दर्शन में रामराज्य की अवधारणा आदर्श समाज के रूप में की गई है, जो न्याय, समता और नैतिकता के आधार पर स्थापित हो।

वर्तमान शासन-प्रणाली में रामराज्य की अवधारणा कई कारणों से प्रासंगिक है। जिसमें मुख्य है नैतिक शासन की प्रेरणा, सामाजिक समानता, न्याय पर बल, पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों को सुदृढ़ करना, मानवता और करुणा की भावना को प्रोत्साहित करना है। अत: हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में रामराज्य का आदर्श आधुनिक शासन-प्रणाली के लिए पियूष तुल्य है।
आधुनिक समाज पारिवारिक विघटन, शारीरिक एवं मानसिक तनाव, सामाजिक असमानता, राजनीतिक भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यों का पतन तथा आर्थिक जटिलताओं जैसी समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान आर्थिक विकास से नहीं अपितु नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से ही संभव है, जो रामचरितमानस में हैं।
शोध से स्पष्ट होता है कि रामचरितमानस का विवेचन केवल मध्यकालीन भारतीय समाज के लिए नहीं अपितु आधुनिक वैश्विक समाज के लिए भी महत्वपूर्ण है। रामचरितमानस का आध्यात्मिक संदेश न केवल भारतीय समाज के लिए अपितु अखिल विश्व के लिए भी प्रासंगिक है।

© 2026 The Author(s). Published by IJCOPE Journal. Website: https://ijcope.org/

अंततः हम यही कहेंगे कि रामचरितमानस न केवल धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, पौराणिक तथा दार्शनिक कृति है बल्कि यह तो एक सार्वकालिक जीवंत जीवन-दर्शन है। इसकी शिक्षाऐं मानव को करुणा, सेवा, नैतिकता, और आध्यात्मिकता की दिशा में आत्मोन्नति के लिए प्रेरित करती हैं। रामचरितमानस ग्रंथ इतना अद्वितीय, अनुपम और पुनीत है कि इसका अवलोकन जितनी बार भी किया जाए हर बार नूतन ही लगता है।
आधुनिक वैश्विक समाज में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के पतन का संकट इस पियूष अमृतवाणी द्वारा हल किया जा सकता है, जो अखंड मानवता के लिए एक प्रेरणादायक पथ प्रदर्शक की भूमिका का निर्वहन विगत कई युगों से कर रहा है।

****
****
**

---

[1] https://kavyasetu.com/index.php/j/article/view/32

[2] राधाकृष्णन, एस. (1923). भारतीय दर्शन (खंड1), लंदनः जॉर्ज एलन एंड अनविन कम्पनी, पृ. 52-60।

[3] शर्मा, ए. (2001). क्लासिकल हिन्दू थॉटः एन इंट्रोडक्शन (शास्त्रीय हिन्दू चिंतन का परिचय). ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, पृ. 41-67।

[4] गोस्वामी, तुलसीदास. (2022). रामचरितमानसः अनुवादक हनुमान प्रसाद पोद्दार-81 (बालकाण्ड). गोरखपुर, गीता प्रेस, पृ. 128।

[5] राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. (2008). प्रधान उपनिषदः नई दिल्लीः हार्पर कॉलिन्स प्रकाशन, पृ. 90-97।

[6] गोस्वामी, तुलसीदास. (2022). रामचरितमानसः अनुवादक हनुमान प्रसाद पोद्दार-81 (उत्तरकाण्ड). गोरखपुर, गीता प्रेस, पृ. 1025-26।

[7] वही, (अरण्यकाण्ड), पृ. 667-668।

[8] वही, पृ. 422।

[9] वही, (अयोध्याकाण्ड), पृ. 525।

[10] वही, (उत्तरकाण्ड), पृ. 950।

[11] वही, पृ. 930।

[12] वही (अरण्यकाण्ड), पृ. 668।

[13] मिश्र, बलदेव प्रसाद. (2016). भारतीय संस्कृति को गोस्वामी तुलसीदास का योगदानः नागपुर विश्वविद्यालय, पृ. 90-103।

[14] रामविलास, शर्मा. (1946). संस्कृति और साहित्य, इलाहाबाद प्रेसः किताब महल जीरो रोड, पृ. 90-98।

[15] गोस्वामी, तुलसीदास. (2022). रामचरितमानसः अनुवादक हनुमान प्रसाद पोद्दार-81 (बालकाण्ड). गोरखपुर, गीता प्रेस, पृ. 09-17।

[16] शर्मा, आर. (2015). रामचरितमानस- पारिवारिक मूल्य और नैतिक सिद्धांत: नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट, पृ. 105-122।

[17] राव, के. आर. (2017). रामराज्यः गांधी का शासन मॉडल, गांधी का धर्म. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस. पृ. 203-218।

[18] Sharma, P., & Verma, S. (2019). *Impact of Ramcharitmanas on psychological resilience in modern society.* Indian Journal of Spirituality and Mental Health, 7(2), P. 20-29.

[19] https://www.hindikunj.com/2025/02/ramcharitmanas-me-sanskritik-manviya-mulya-ka-mahatva.html

[20] शर्मा, एम. सी. (2022). रामचरितमानस से बेहतर जीवन दिशा निर्देश: दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास. पृ. 42-47

[21] रामविलास, शर्मा. (1946). संस्कृति और साहित्य, इलाहाबाद प्रेस: किताब महल जीरो रोड, पृ. 96-102।